हॉब्स, लॉक एवं रूसो की प्राकृतिक अवस्था की अवधारणा

डॉ0 ज्योत्स्ना गौतम,

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ, उ0प्र0

शोध सारांश

प्रमुख संविदावादी विचारक हॉब्स, लॉक, रूसो द्वारा राज्य के अस्तित्व में आने से पूर्व एक प्राकृतिक अवस्था की कल्पना की गई है, जिसमें कुछ कमियॉ थीं, उन्हें दूर करने के लिए मानव ने एक समझौते के अन्तर्गत राज्य का निर्माण किया। हॉब्स द्वारा एक निराशापूर्ण, आसुरी, गुणों, प्राधान्य, भयंकर और अव्यवस्थित प्राकृतिक अवस्था की कल्पना की है, जिसमें मनुष्य का जीवन एकाकी, निर्धन, घृणित, पाशविक एवं अल्पायु था, वही लॉक द्वारा कल्पित प्राकृतिक अवस्था शक्ति, सद्भाव, पारस्परिक सहायता, रक्षा, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं मनुष्यों के विवेक द्वारा संचालित अवस्था थी, लेकिन एक सर्वमत द्वारा अनुमोदित विधि एवं विधि द्वारा उचित–अनुचित का निर्धारण करने वाले न्यायाधीशों का अभाव था। रूसो द्वारा एक स्वच्छन्द, निश्छल, निर्भय, सन्तुष्ट, स्वस्थ, नैसर्गिक गुणों से युक्त मानवीय जीवन की प्राकृतिक अवस्था में कल्पना की है, जो जनसंख्या वृद्धि एवं तर्क के उदय के पश्चात् छिन्न–भिन्न हो गयी, फलतः मनुष्यों को सामाजिक समझौते द्वारा सामाजिक विनयमन के लिए राज्य के निर्माण हेतु सहमति बनानी पड़ी।

मुख्य शब्द– *हॉब्स, लॉक, रूसो, प्राकृतिक, अवस्था, समझौता*

मानव सभ्यता के विकास को ज्ञात करने का व्यक्ति का एकमात्र साधन इतिहास है, लेकिन इतिहास व्यक्ति के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने में समर्थ नहीं है लेकिन व्यक्ति के जिज्ञासु प्राणी होने के कारण, जब इतिहास उसके प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ हो जाता है, तो वह कल्पनाओं का आलम्ब लेता है। राज्य की उत्पत्ति के विषय में राजनीतिक विचारकों के मध्य कोई सर्वमान्य सिद्धान्त नहीं है, राज्य की उत्पत्ति से सम्बन्धित सामाजिक समझौते का सिद्धान्त कल्पना पर आधारित एक प्रमुख सिद्धान्त है, जिसके अन्तर्गत समझौते से पूर्व एक प्राकृतिक अवस्था की कल्पना की गई है। इस सिद्धान्त का विधिवत एवं वैज्ञानिक रूप से प्रतिपादन हॉब्स, लॉक और रूसो द्वारा किया गया है, जिन्हें संविदावादी विचारक भी कहा जाता है। संविदावादियों के अनुसार राज्य का निर्माण व्यक्तियों द्वारा पारस्परिक समझौते के आधार पर किया गया है, उन्होंने मानव इतिहास को दो भागों में विभक्त किया है, प्रथम– प्राकृतिक अवस्था का काल (राज्य की स्थापना से पूर्व), द्वितीय– नागरिक जीवन के प्रारम्भ होने के बाद का काल। इस सिद्धान्त के प्रतिपादक राज्य की स्थापना से पूर्व एक ऐसी प्राकृतिक अवस्था के अस्तित्व को स्वीकार करते है।, जिसके अन्तर्गत जीवन को व्यवस्थित रखने के लिए राज्य या राज्य जैसी कोई अन्य संस्था नहीं थी, प्राकृतिक अवस्था कैसी थी, इस पर तीनों ही विचारकों के भिन्न–भिन्न मत हैं, इस क्रम में सर्वप्रथम हॉब्स के विचार उल्लेखनीय हैं।

हॉब्स का जन्म 1588 में इंग्लैण्ड में हुआ था, हॉब्स के समय इंग्लैण्ड की राजनीति में

काफी परिवर्तन हुआ, तत्कालीन राजा चार्ल्स प्रथम की राजनीतिक अदूरदर्शिता के कारण राजा और संसद के मध्य संघर्ष छिड़ गया, परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड में बड़े पैमाने पर हिंसा, रक्तपात, हत्या तथा नागरिकों के जीवन एवं सम्पत्ति की क्षति हुई। फलतः हॉब्स इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि बल प्रयोग द्वारा ही शक्ति की स्थापना की जा सकती है। हॉब्स के विचारों पर उसके जीवन के अनुभवों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा।

हॉब्स ने प्राकृतिक अवस्था की कल्पना का उल्लेख अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ लेवियाथन में किया है। उसके अनुसार प्राकृतिक अवस्था का जीवन वह अवस्था है, जब मानव राजसत्ता विहीन स्थिति में रहते है। इस अवस्था में मनुष्य का व्यवहार उसके संवेगों द्वारा निर्देशित रहता है। स्वार्थी मनुष्य को कानून तथा सत्ता के अभाव में अपनी आत्मरक्षा के एकमात्र प्राकृतिक अधिकार की रक्षा के लिए संघर्षरत रहना पड़ता है, ऐसी अवस्था में 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' का नियम प्रचलित रहता। कानून और न्याय की व्यवस्था के अभाव के कारण प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे का शत्रु हो जाता है। हॉब्स के अनुसार मनुष्य स्वभाव से एक असामाजिक प्राणी है, इसीलिए आदिम व्यवस्था में जब कोई ऐसी सर्वोच्च सत्ता नहीं थी, जो सबको शान्ति से रहने के लिए बाध्य करे तो स्वाभाविक था कि वे आपस में एक–दूसरे को समाप्त करने के प्रयत्न में संलग्न रहते।

हॉब्स की प्राकृतिक अवस्था में युद्ध के समय शक्ति और धोखा, ये दोनों ही नैतिक गुण समझे जाते थे। न्याय–अन्याय के विचार का कोई नैतिक महत्त्व नहीं था, क्योंकि यह समाज में रहने वाले व्यक्तियों से सम्बन्धित है, न कि एकान्तवासियों से। इस आदिम व्यवस्था में भोग–विलास की वस्तुएँ उपलब्ध नहीं थीं जो सभ्य समाज में मानव जीवन के लिए उपयोगी समझी जाती है, व्यक्ति के लिए किसी भी प्रकार की निजी सम्पत्ति का संचय करना असम्भव था, ऐसी स्थिति में साहित्य, कला, संस्कृति, सभ्यता के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती थी। ये सब आवश्यकताएँ जो मनुष्य को पशु के स्तर से ऊपर उठाती हैं, इस प्राकृतिक अवस्था में नहीं थी, यथा– उद्योग, कृषि, निवास हेतु मकान, पृथ्वी का ज्ञान, समय का अनुमान, समाज आदि। इस प्रकार मनुष्य का जीवन एकाकी, निर्धन, घृणित, पाशविक और अल्पायु होता था (हॉब्स, लेवियाथन, चेप्टर–13)। आसुरी गुणों की प्रधानता के कारण मानव जीवन भयंकर और अव्यवस्थित था, इस अवस्था में कोई किसी का अभिभावक, मित्र और रक्षक नहीं था। सब एक–दूसरे के भक्षक थे, मानव जीवन अवसादपूर्ण, गतिरोध, भय एवं निस्सार था। यह प्राकृतिक अवस्था का दृश्य भारतीय धर्मग्रन्थों में वर्णित मत्स्य न्याय जैसा था। सामान्य विधि अथवा राजकीय नियम, कानून की अनुपस्थिति में प्रतिज्ञा भंग, बल प्रयोग, धोखा आदि सब उचित माने जाते थे, मनुष्य के पास स्वयं की शक्ति और चतुरता ही सुरक्षा का साधन था। इस अवस्था में जीवन का नियम केवल यह है कि मनुष्य जो कुछ प्राप्त कर सकता है, उसे प्राप्त कर ले और उसे जब तक अपने पास रख सकता है, तब तक अपने पास रखे (हॉब्स, लेवियाथन, चेप्टर–13)। प्राकृतिक अवस्था में कोई स्वीकार्य अधिकार भी नहीं थे और न ही उस पर किसी का कोई नियन्त्रण था। इस प्रकार हॉब्स द्वारा वर्णित प्राकृतिक अवस्था प्रत्येक व्यक्ति के विरुद्ध प्रत्येक व्यक्ति के संघर्ष की दशा है, यह अनन्त उत्पीड़न और असुरक्षा की स्थिति है।

हॉब्स के अनुसार जहॉ प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य रक्तपिपासु एवं पाशविक था, वहॉ लॉक के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में शान्ति, सद्भावना, पारस्परिक सहायता, रक्षा और मनुष्यों का आचरण उनके विवेक द्वारा संचालित था। इस अवस्था में मनुष्य अपनी इच्छानुसार व्यवहार एवं जीवनयापन करने में पूर्ण रूप से स्वतन्त्र था। किन्तु यह स्वतन्त्रता स्वच्छन्दता के रूप में थी

क्योंकि प्राकृतिक विधि मानवीय अधिकारों और कर्त्तव्यों की पूरी तरह से व्यवस्था करती थी अर्थात् प्राकृतिक नियम से सीमित थी। लॉक के अनुसार प्राकृतिक अवस्था नियमविहीन नहीं थी अपितु उसके अन्तर्गत यह नियम प्रचलित था कि तुम दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करो, जैसा व्यवहार तुम दूसरों से अपने प्रति चाहते हो।

प्राकृतिक अवस्था में व्यक्तियों को अपना कार्य करने एवं अपनी सम्पत्ति तथा अपने शरीर का उपयोग करने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। उसे इसके लिए किसी अन्य की अनुमति एवं इच्छा पर निर्भर नहीं रहना पड़ता था। इस प्रकार कहा जा सकता है कि लॉक की प्राकृतिक अवस्था प्राकृतिक कानूनों से प्रतिबन्धित होने के कारण हॉब्स की प्राकृतिक अवस्था के समान भयानक एवं संघर्षमय नहीं थी अपितु भातृत्व और न्याय भावना से परिपूर्ण थी। लॉक के अनुसार मनुष्य एक सामान्य प्राणी है, मानव स्वभाव की सामाजिकता के कारण प्राकृतिक अवस्था संघर्ष की अवस्था नहीं हो सकती, वरन् यह तो सदइच्छा, सहयोग, सुरक्षा की अवस्था थी।

लॉक ने प्राकृतिक नियम की नैतिक एवं तर्कमूलक व्याख्या प्रस्तुत की है, उसके अनुसार विवेक ही प्राकृतिक नियम है, किसी को भी दूसरे के जीवन, स्वास्थ्य, स्वतन्त्रता और सम्पत्ति पर अतिक्रमण नहीं करना चाहिए, प्राकृतिक नियम अथवा विवेक को समझने के लिए मानव को अपनी दृष्टि को अन्तर्मुखी करना होगा, क्योंकि ईश्वर ने उसे प्रत्येक के हृदय में आरोपित कर दिया है।

लॉक के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में सभी समान हैं, समानता से उसका आशय शारीरिक और बौद्धिक शक्तियों की समानता से है। वह बुद्धि को वैयक्तिक समानता का आधार मानता है, उसका मत है कि बच्चों में बुद्धि का विकास हो जाने पर वे प्रत्येक दृष्टि से अन्यों के समान है। लॉक व्यक्ति को बौद्धिक प्राणी मानता है, उसके अनुसार प्राकृतिक नियम व्यक्ति को यह बताते हैं कि वे समान, स्वतन्त्र एवं एक ईश्वर की रचना है इसलिए सभी के समान अधिकार हैं और सभी व्यक्तियों का दायित्व है कि वे सभी व्यक्तियों के अधिकारों का आदर करे। लॉक के अनुसार मुख्य प्राकृतिक नियम यह है कि समस्त समाज के प्रत्येक सदस्य की रक्षा होनी चाहिए, यदि वह सार्वजनिक हित के विरुद्ध न हो। प्राकृतिक नियम यह कहते हैं कि सत्य बोलो तथा विश्वासघात न करो, प्राकृतिक नियम ही मनुष्यों को प्राकृतिक अवस्था में भी सम्पत्ति का अधिकार मनुष्यों को प्रदत्त करते हैं।

लॉक की प्राकृतिक अवस्था में प्रत्येक व्यक्ति कुछ अधिकारों का उपभोग करता है, जिन्हें लॉक प्रकृति प्रदत्त अधिकार कहता है, उसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को जीवन का अधिकार है, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्राणरक्षा को आवश्यक समझता है जो उसे करने का अधिकार है। यहाँ हॉब्स और लॉक के विचारों में पूर्ण साम्यता देखने को मिलती है, द्वितीय स्वतन्त्रता के अधिकार के अन्तर्गत व्यक्ति की स्वतन्त्रता असीमित नहीं है अपितु प्राकृतिक नियम द्वारा प्रतिबन्धित है। तृतीय सम्पत्ति के अधिकार को लॉक सबसे मुख्य एवं मौलिक अधिकार मानता है, उसका विचार था कि ईश्वर द्वारा इस संसार में सभी वस्तुओं पर सभी को समान अधिकार दिये जाने के कारण आरम्भ में व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं थी, परन्तु जैसे ही कोई मनुष्य किसी वस्तु के साथ श्रम को मिला देता है, वह उसकी व्यक्तिगत सम्पत्ति हो जायेगी। लॉक के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार है कि प्राकृतिक नियम का उल्लंघन करने पर नियम के उल्लंघनकर्ता को दण्डित करे, स्वाभाविक है कि जब तक कानून के पीछे कोई शक्ति नहीं होती है तो कोई व्यक्ति उसका पालन नहीं करता है। प्राकृतिक अवस्था में चूँकि सभी व्यक्ति समान हैं इसलिए सभी को इस नियम को निष्पादित करने का अधिकार दिया गया है।

लॉक के मतानुसार प्राकृतिक अवस्था और युद्ध की अवस्था में महान अन्तर है। जब मनुष्य अपनी बुद्धि के अनुसार जीवनयापन करते हैं परन्तु उनके ऊपर कोई संयुक्त शक्ति उनके मध्य निर्णय करने की नहीं होती है तो वही प्राकृतिक अवस्था है। लॉक के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में एक नियम है जिसका लोग पालन करते हैं, कुछ अधिकार हैं तथा नियम भंग करने वालों के लिए दण्ड की व्यवस्था है। प्रश्न उठता है कि इस जीवन से मनुष्य असन्तुष्ट क्यों था, इस सम्बन्ध में लॉक का विचार था कि कुछ असुविधाओं के कारण प्रकृति प्रदत्त अधिकारों का उपयोग पूर्ण रूप से इस दशा में सम्भव नहीं था। प्राकृतिक अवस्था में उचित–अनुचित के मापदण्ड को निर्धारित करने के लिए एक स्पष्ट तथा सर्वसम्मति द्वारा अनुमोदित विधि का अभाव था, दूसरे प्राकृतिक अवस्था में ऐसे न्यायाधीशों का अभाव है जो स्थापित विधि के अनुकूल सभी अभियोगों का निष्पक्ष रूप से निर्णय करे, तीसरे इस अवस्था में दण्ड को निष्पादित करने के लिए आवश्यक शक्ति का अभाव रहता है। इन असुविधाओं को दूर करने के लिए एक ही उपाय है, वह है राज्य की स्थापना, परन्तु क्योंकि प्रकृति द्वारा सभी मनुष्य स्वतन्त्र तथा समान हैं, इसलिए राज्य संस्था की स्थापना इन स्वतन्त्र तथा समान व्यक्तियों के मध्य केवल एक समझौते द्वारा ही सम्भव है।

रूसों के विचारों पर अपने जन्मस्थान स्विटजरलैण्ड की प्रत्यक्ष प्रजातन्त्रात्मक शासन पद्धति एवं बाद में उसके निवास स्थान बने फ्रांस की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। फ्रांस की तत्कालीन परिस्थितियों से वह इस निष्कर्ष पर पहुॅचा कि सभ्यता और बुद्धि के कारण मनुष्य की अवनति हुई है, समाज की बुराइयॉ इसी सभ्यता का प्रतिफल है। व्यक्ति पुनः अब प्राकृतिक अवस्था में वापस नहीं जा सकता है अतः वर्तमान व्यवस्था का नियमन आवश्यक है जिससे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और सामाजिक नियन्त्रण के मध्य सामंजस्य स्थापित किया जा सके। रूसो द्वारा अपनी प्रमुख रचनाओं, कलाओं और विज्ञानों के नैतिक प्रभावों पर प्रबन्ध, असमानता के उद्भव पर प्रबन्ध, द सोशल कान्ट्रेक्ट, एन इन्ट्रोडक्शन टू पालिटिकल इकॉनोमी, ईमाइल में अपने राजनीतिक विचारों को व्याख्यापित किया है।

राजनीतिक दर्शन की परम्परा में रूसो का महत्त्वपूर्ण स्थान है, उसके प्रतिपादित विचारों, स्वतन्त्रता, समानता तथा भातृत्व का आधुनिक इतिहास निर्माण में महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। आधुनिक प्रजातन्त्रवाद का वह सबसे महान दार्शनिक है। (भ्मदतल डंपदए ।दबपमदज सूंए 1905ए चचण 76.77)

रूसो द्वारा अपने पूर्ववर्ती विचारकों के प्राकृतिक अवस्था से सम्बन्धित विचारों को अपूर्ण माना गया है। रूसो द्वारा व्यक्ति के मौलिक स्वभाव के विवरण के साथ उसमें सभ्यता जनित गुण–दोषों का भी वर्णन किया गया है, उसके अनुसार इसके अध्ययन द्वारा हम समाज के विकास के आधार से परिचित हो सकते हैं। रूसो के अनुसार मानव स्वभाव आत्मप्रेम (आत्मरक्षा) एवं सहानुभूति (परस्पर सहायता) जैसी प्रवृत्तियों से निर्मित है, फलतः मनुष्य प्राकृतिक रूप से सदाशय, अच्छा, भोला, निश्चिन्त, भविष्य की चिन्ता से मुक्त आत्मनिर्भर प्राणी था। उसमें स्वभावतः आत्मविकास की प्रवृत्ति है जिसके कारण अन्य शक्तियों की उत्पत्ति के कारण उसमें कुछ बुराइयों का उद्भव हुआ। रूसो के अनुसार मनुष्य के पतन के लिए भ्रष्ट और दूषित सामाजिक संस्थाएॅ दोषी हैं, भ्रष्ट कला मनुष्य को भ्रष्ट बनाने के लिए उत्तरदायी है। मनुष्य की मौलिक नियामक प्रवृत्तियों आत्मरक्षा और परमार्थ में संघर्ष उपरान्त नवीन समस्याओं के समाधान के लिए व्यक्ति द्वारा समझौतावादी प्रवृत्ति को अपनाया गया, जिससे अन्तःकरण की भावना उत्पन्न हुई जो व्यक्ति को नैसर्गिक रूप से प्राप्त है जिसका

मार्गदर्शन विवेक द्वारा संचालित है। रूसो द्वारा अन्तःकरण पर अधिक बल दिया गया है, वह विवेक का विरोधी है क्योंकि विवेक, श्रद्धा, विश्वास एवं सहज ज्ञान के विरोध में तर्क–वितर्क को जन्म देता है। मानव जीवन में विवेक के स्थान की रूसो द्वारा पूर्णतः अवहेलना नहीं की गई है लेकिन वह विवेक को अन्तिम व असीम अधिकार प्रदान नहीं करता है।

मनुष्य की उपरोक्त प्राकृतिक मानवीय प्रवृत्तियों से युक्त स्वच्छन्द प्राकृतिक अवस्था का चित्रण रूसो द्वारा किया गया है। रूसो का मनुष्य भला, असभ्य, जीव था जो स्वतन्त्र, सन्तुष्ट, स्वस्थ, निर्भय एवं नैसर्गिक शक्तियों से युक्त, समाज एवं सभ्यता से मुक्त होकर प्राकृतिक अवस्था में जीवनयापन कर रहा था, बुद्धि एवं विवेक के अभाव में उसे गुण एवं अवगुण का बोध नहीं था। प्राकृतिक अवस्था में वह आत्मनिर्भर था, भौतिकता का विकास न होने के कारण उसकी आवश्यकतायें अति सूक्ष्म थी, जो प्रकृति प्रदत्त संसाधनों के माध्यम से पूर्ण हो जाती थी, प्राकृतिक अवस्था में मनुष्यों के मध्य तेरे मेरे व ऊँच–नीच की भेदभावना का अभाव था, क्योंकि व्यक्तिगत सम्पत्ति, ज्ञान–विज्ञान, कला, विद्या आदि का उस समय उद्‌भव नहीं हुआ था, मनुष्य भविष्य की चिन्ता से मुक्त था, प्राकृतिक नियम अपने हितों को देखो, किन्तु दूसरे की कम से कम हानि हो, द्वारा व्यक्ति का जीवन संचालित था, सभी प्रकार के बंधनों व नियन्त्रण से विमुक्त मनुष्य एक स्वच्छंद जीवनयापन कर रहा था, लेकिन जंगली जीवनयापन करते हुए भी उसके प्राकृतिक गुण, नेकी, सज्जनता के कारण वह चरित्रहीन और भ्रष्ट नहीं था।

रूसो के अनुसार जनसंख्या वृद्धि और तर्क के उदय के कारण यह स्वर्णिम प्राकृतिक अवस्था स्थायी नहीं रही। जनसंख्या वृद्धि के कारण आर्थिक गतिविधियों के विकास में तीव्रता आयी, फलतः मनुष्य के जीवन से सरलता एवं प्राकृतिक प्रसन्नता का लोप हो गया। आर्थिक विकास की अभिवृद्धि ने स्थायी आवास, व्यक्तिगत सम्पत्ति और परिवार प्रथा को जन्म दिया। रूसो के अनुसार, ''वह प्रथम मनुष्य ही नागरिक समाज का वास्तविक संस्थापक था, जिसने भूमि के एक टुकड़े को घेर लेने के बाद यह कहा था कि यह मेरा है'' और उसी समय समाज का निर्माण हुआ जब अन्य लोगों ने एक–दूसरे से प्रेरित होकर स्थानों और वस्तुओं को अपना समझना प्रारम्भ किया। बढ़ती आर्थिक गतिविधियों ने मनुष्यों के मध्य सहयोग को जन्म देकर आधुनिक समाज निर्माण का आधार तैयार किया, शक्तिशाली व्यक्ति को अधिक मात्रा में कार्य करने के उपरान्त भी दस्तकार से कम लाभ का अंश मिलता था, फलतः धनी एवं निर्धन का भेद उत्पन्न हुआ, जो असमानता का जनक है, जिसने मनुष्य की प्राकृतिक अवस्था की सुख–शान्ति को छिन्न–भिन्न कर दिया।

इस प्रकार रूसो की प्राकृतिक अवस्था तीन भागों में विभाजित है, प्रथम–आदि प्राकृतिक अवस्था, जब मनुष्य स्वतन्त्र निश्छल जीवनयापन कर रहा था, द्वितीय–मध्यवर्ती प्राकृतिक अवस्था, जो असमानता एवं संचय प्रवृत्ति के कारण उत्पन्न हुई, तृतीय–दमन एवं अत्याचार युक्त अवस्था, जिसमें मनुष्य का जीवन असहनीय होकर सर्वनाश की ओर जा रहा था, जिससे मुक्ति के लिए 'सामाजिक समझौता' की आवश्यकता उत्पन्न हुई, जिसमें पुनः प्रकृति की ओर लौटने का आह्वान किया गया। प्रकृति की ओर लौटने का आह्वान आदिम अवस्था में वापिस लौटने से न होकर, प्राकृतिक गुणों की ओर लौटने से है, जिसमें दम्भ, आपसी तुलना व कल्पनात्मक इच्छाओं का परित्याग कर, विनम्र, प्रकृति सुलभ सौन्दर्य, सरलता और सहानुभूति जैसे प्राकृतिक गुणों से युक्त हो व्यक्ति और संस्थानों का पुनर्निर्माण करे।

हॉब्स, लॉक, रूसो के प्राकृतिक अवस्था पर विचारों के विश्लेषण उपरान्त निष्कर्षतः कहा

जा सकता है कि तीनों के विचार एकाकी और ऐतिहासिक प्रमाण रहित हैं। प्राकृतिक अवस्था में हॉब्स द्वारा मानवीय प्रकृति को स्वार्थी और क्रूर, वही लॉक द्वारा उसे विवेकशील प्राणी व रूसो द्वारा सरल स्वभाव का बताया गया है, जबकि मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण यह सिद्ध करते हैं कि मनुष्य की प्रकृति एकपक्षीय नहीं है, मनुष्य में स्वार्थ, कपट, हिंसक, असामाजिक, युद्धपिपासु प्रवृत्ति होने के साथ ही साथ दया, प्रेम, परोपकार, सहानुभूति जैसे गुणों का भी प्राधान्य है अतः मानवीय प्रकृति के बारे में तीनों के विचारों का मूल आधार ही गलत है। रूसो ने मानव के विशिष्ट गुण विवेक, जो उसे अन्य जीवों से उच्च स्थान प्रदान करते हैं, को मानव के विकास में उसकी भूमिका की अवहेलना की है। द्वितीय प्राकृतिक अवस्था का चित्रण, जो संविदावादियों द्वारा किया गया है, वह भी ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रमाणित नहीं है। मानवशास्त्र के अनुसंधानों द्वारा भी इस प्राकृतिक अवस्था की कल्पना को सहमति प्रदान नहीं की गई हैं, उनके अनुसार सबके साथ युद्ध में रत की स्थिति में मनुष्य कभी नहीं रहा, ना ही व्यक्ति ने कभी एकाकी एवं असामाजिक जीवन व्यतीत किया है। इस विषय में स्वयं रूसो ने अपनी पुस्तक 'क्पेबवनतेम वद प्दमुनंसपजल' में कहा है कि, ''प्राकृतिक अवस्था ऐसी थी जो अब नहीं है, जो सम्भवतः कभी नहीं थी और शायद कभी नहीं होगी, पर जिसको तत्कालीन समाज की उचित धारणाओं को समझने के लिए जान लेना आवश्यक है।

समझौतावादी विचारकों द्वारा प्राकृतिक अवस्था में व्यक्ति के प्राकृतिक अधिकारों का उल्लेख भी किया गया है, हॉब्स द्वारा आत्मरक्षा का अधिकार, लॉक द्वारा जीवन स्वतन्त्रता और सम्पत्ति का अधिकार व रूसो द्वारा प्राकृतिक स्वतन्त्रता का अधिकार प्राकृतिक अवस्था में व्यक्तियों को प्रदत्त किया गया है, रूसो का स्वतन्त्रता के विषय में कथन कि, ''मनुष्य स्वतन्त्र जन्मा है, परन्तु वह सर्वत्र बन्धनों में आबद्ध है'', विशिष्ट उल्लेखनीय है। संविदावादी विचारकों के प्राकृतिक अवस्था में प्राकृतिक अधिकारों का निरूपण समाज व राज्य की सत्ता के बिना एक कोरी कल्पना से अधिक कुछ नहीं है। हॉब्स द्वारा प्राकृतिक अवस्था में प्राकृतिक कानूनों का उल्लेख भी किया गया है, हॉब्स की प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो, जैसा कि वह स्वयं दूसरों से अपने प्रति चाहता है, के नियम से संचालित था, लेकिन एक स्वार्थी मनुष्य से कानून के अनुपालन की कल्पना असंगत प्रतीत होती है। लॉक की प्राकृतिक अवस्था भी स्वतन्त्रता और समानता के नियम पर आधारित थी, लेकिन बिना सर्वमान्य कानून और कानूनवेत्ता के अभाव में यह कल्पना मात्र ही है।

हॉब्स, लॉक, रूसो के राज्य पूर्व प्राकृतिक अवस्था के परीक्षण के उपरान्त निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भले ही प्राकृतिक अवस्था से सम्बन्धित उनके विचारों का ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक नैतिक आधार नहीं है, लेकिन जिस प्राकृतिक अवस्था एवं मानवीय व्यवहार का चित्रण संविदावादियों द्वारा किया गया है, उसमें आदिम काल से सम्बन्धित कुछ सत्यता अवश्य प्रतीत होती है, राज्य की स्थापना मानव की आवश्यकता के कारण हुई व राज्य एक मानवीय कृति है, जिसका निर्माण व्यक्ति हित में उसके कष्ट निवारण व समाज के नियमन हेतु हुआ है, का विचार आधुनिक प्रजातान्त्रिक प्रणाली व कल्याणकारी राज्य की स्थापना का आधार है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. ए0डी0 आशीर्वादम, कृष्णकान्त मिश्र, राजनीति विज्ञान, एस0 चन्द एण्ड कम्पनी प्रा0लि0, नई दिल्ली, 2016
2. ओ0पी0 गाबा, पाश्चात्य राजनीतिक विचारक, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 2017

3. अम्बा दत्त पंत, मदन गोपाल गुप्त, हरीमोहन जैन, राजनीतिशास्त्र के आधार, सेण्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, 2004
4. J.C. Johari, Principles of Modern Political Science, Sterling Publishers Pvt. Ltd., Greater Noida, 2018
5. Sukhbir Singh, History of Political Thought, Rastogi, Publication, Meerut, 2017
6. Dr. Vidya Dhar Mahajan, Political Theory (Principles of Political Science), S. Chand & Company Pvt. Ltd., New Delhi, 2016